International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1 February- 2015 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

बचपन हेतु अभिभावकों के अपेक्षित कदम

श्रीमती माधुरी मिश्रा
अनुसंधानकर्त्री
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय
झुंझुनू राजस्थान

डॉ. श्याम सुन्दर कौशिक
शोध निदेशक
पूर्व प्रभागाध्यक्ष
सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू (राज)

सार संक्षेप (Summary)

हम यह मानते है कि दुनिया वास्तव में है। यह हम स्वीकार करते हैं कि तब हमारा कार्य प्रारम्भ होता है। हम हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप समाज, परिवार चाहते हैं। हम हमारे बच्चों को हमारी अपेक्षा के अनुरूप चाहते हैं। इसके लिऐ सभी एक स्वप्न लेते है कि हमारे बच्चे भविष्य में शिष्ट, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, स्वयं निर्णय लेने वाले, सामाजिकता युक्त प्रतिष्ठित होंगे। लेकिन हमें हमारे स्वप्न के अनुरूप बच्चे, परिवार व समाज तैयार करने के लिए उसके अनुरूप कार्य एवं व्यवहार करना तो होगा। हमें हमारी अपेक्षानुरूप परिवार तैयार करने के लिए हमारा आचरण जीने का सलीका, बच्चों के साथ व्यवहार वैसा ही करना होगा, यहा व्यवहार, आचरण में आने वाली बाधाएं भी दूर करनी होगी, यदि ऐसा नहीं करते है तो यह सम्भव नहीं है कि बबूल के पेड़ लगाएं और आम की अपेक्षा करें। हमें जैसा समाज चाहिए उसके अनुरूप बच्चों के साथ व्यवहार व आचरण का प्रदर्शन करना होगा।

मैंने समय–समय पर अभिभावकों, शिक्षकों से वार्ताएं की थी। वार्ताओं से स्पष्ट है कि हमारा समाज, परिवार का प्रत्येक सदस्य शिष्ट, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, व्यवहार कुशल, नैतिक गुणों से युक्त होना चाहिए। ऐसा समाज, परिवार बनाने के लिए हमें उनके साथ भी उपरोक्त गुणों को विकसित करने की परिस्थितियां, अनुभव प्रदान करने वाला व्यवहार आचरण करना चाहिए परन्तु हम क्या क्या कर रहें है ? क्या करना चाहिए के मध्य अन्तर है। यह ज्ञान हमें करना होगा। यह तभी होगा जब हम हमारे वर्तमान व्यवहार व आचरण का विश्लेषण करेंगे। हम हमारे व्यवहार का अवलोकन करें। इसके प्रभाव का विश्लेषण करें। हमारी अपेक्षाओं तक बच्चे, परिवार, समाज पहुंचे। इसके लिए अपेक्षित परिवर्तन का आकलन करें तो निश्चित रूप से हम एक उत्कृष्ट समाज, राष्ट्र निर्माण का कर पायेंगे।

हमें बच्चों के साथ शिष्ट व्यवहार करना चाहिए। यह लगभग कठिन है। मात्र उन व्यक्तियों के लिए जिन्होनें ताकतवरों के साथ अति विन्रम व कमजोरों के साथ अभद्र व्यवहार किया है। उन पर धौंस जमाना सीखा है या जिनके लिए बच्चे अत्यन्त प्रिय पालतु जन्तु के नाम से पुकारते हैं जैसे – पप्पी, पिन्टु, सन्टी, डम्पी, शेक आदि। ये सभी नाम हम पालतू पिल्ला या बिल्ली या खरगोश आदि के रखते हैं। उनके साथ नाम के अनुरूप व्यवहार करते हैं। यदि हम अपने व्यवहार पर चिन्तन करें तो यह स्पष्ट है कि हमारा यह व्यवहार बच्चे के सम्मान, अस्मिता पर ठेस पहुंचाता है। उसका स्थान पालतु जानवरों के स्तर तक का है। अतः हमारा व्यवहार बच्चे को शिष्ट व्यवहार करने के लिए तैयार करने में असमर्थ है। अतः हमें यह सोचने के लिए हमारा व्यवहार बाध्य करता है कि हम भविष्य में बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करें जिससे वह शिष्ट बनें ?

बालक में शिष्ट आचरण के लिए आवश्यक है कि हम उसका आत्म सम्मान और अस्मिता का आदर करें। अतः हमें प्रत्येक बच्चे से तब तक औपचारिक व्यवहार करना चाहिए जब तक हम यह नहीं जान सकें कि इनको कैसा व्यवहार पसन्द है ? हमें बच्चे के भौतिक व भावनात्मक स्थान का तब तक ध्यान रखना चाहिए, जब तक वह यह यह नहीं दर्शाता कि मुझसे इन स्थानों तक इतनी दूरी रखें, हमारा स्वागत करता है। यद्यपि शिष्टता का अर्थ औपचारिकता या विनम्रता से अधिक है परन्तु विनम्रता तो होती ही है। हमें बच्चों से कृपया! धन्यवाद! या जरा माफ करें। हमें ठीक वैसा व्यवहार करना

सीखना होगा, जैसा हम दूसरों के साथ करते है। लेकिन इसके विपरीत हम बच्चों के साथ नौकर जैसा बरताव करते हैं। बच्चों से हम उन समस्त कार्यो को करवाते हैं जो हम हमारे हमउम्र, यहा तक की नौकर से नही करवाते हैं अर्थात् हम जिन कार्यो को हमउम्र या नौकर से करवाने की कल्पना तक नहीं कर सकते है। अतः स्पष्ट है कि हम बच्चों के साथ नौकर से भी घटिया व्यवहार करते है।

मई 10,2014 को जोसफिन मेरी बहिन के घर मेहमान आई। यह भारतीय परम्परा, कार्य शैली नहीं जानती। अतः घर के प्रत्येक सदस्य उसे संदर्भो के आधार पर सीखाने का प्रयास कर रहे है। जोसफिन स्वयं सीखने के लिए आतुर हैं सभी सदस्य स्नेह पूर्ण व्यवहार कर रहे हैं तथा आदरपूर्वक उसे सीखाने की स्थितियों को प्रदत कर रहे हैं ताकि जोसफिन को किसी प्रकार की तकलीफ ना हो। यहां मुझे यह विश्वास हुआ कि बच्चा भी हमारे घर, परिवार में नवागन्तुक है उसे दुनिया देखने की दृष्टि भी उसके प्रति हमारे द्वारा किये जानें वाले व्यवहार में समानता होनी चाहिए अर्थात् हमारे व्यवहार में विनम्रता होनी चाहिए।

हम विन्रम बनें इसके लिए सबसे आसान कार्य बच्चों की व्यैक्तिकता का सम्मान और उसकी सुरक्षा करना है। यह हम तब तक करें जब तक बच्चों को कानून मनमाने ढ़ग से तलासी व जब्ती से सुरक्षा का अधिकार नहीं देता है। हमें उसके साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे उसे ऐसा लगे कि यह सब अधिकार उसके पास है। यहा इसका तात्पर्य यह कि बच्चे की प्रत्येक वस्तु उसकी स्वीकृति के पश्चात् ही लेनी या छूनी चाहिए। हमें बच्चे के कमरे में उसकी अनुमति पूर्व नहीं जाना चाहिए।
तानि. दिनांक 21.04.2013 को सांयकाल 8 बजे मैं जब उसके कमरे में जा रहा था वह तपक कर बोली– नानाजी, मैं पापाजी से सीक्रेट बात कर रही हूँ, आप बाहर रहें। मैने बच्चों के कमरे के आगे यह लिखा हुआ पाया ''बाहर रहो,'' निजी क्षेत्र,'' ''खतरा,'' बिना आज्ञा के अन्दर नहीं आये''आदि। इनकी ऐसी बातों पर प्रायः हम हंस देते है पर यहां पर यह स्पष्ट संकेत है कि बच्चे हमसे यह कहना चाहते हैं कि आप हमें एकान्तता प्रदान करें। लेकिन हमने उन्हें एकान्तता कभी नहीं दी है। बच्चे यह जानते है, कि उनकी एकान्तता का कोई सम्मान नहीं होगा। उनका कमरा या उनकी आपसी वार्ता सीक्रेट नहीं हो सकती। यहां एकान्तता से तात्पर्य स्वयं के वैचारिक व भौतिक स्थान से है। लेकिन हम सब यह मानकर चलते है कि बच्चों की सब कुछ बाते हम जानें। इसका हमें अधिकार है, मात्र दायित्व ही नहीं है। हम लगभग बच्चों से घर पर यह पूछते है कि '' आज विद्यालय में क्या किया'' बच्चों का प्रत्युत्तर होता है ''कुछ नहीं''। यह कहने का अर्थ है कि ऐसा कुछ नहीं जो आपको बताया जाये या बताने की हिम्मत करूं, कम से कम अभी तो नहीं। यदि आपको यह सुनना अच्छा लगता है कि बच्चे क्या–क्या कर रहे हैं तो आपको अमूमन बच्चों से यह प्रश्न नहीं करने चाहिए।
हमें बच्चों को अधिक जानकार, दक्ष एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। परन्तु लगभग सभी लोगों की मान्यताएं हैं कि बच्चों के पास पैसे होंगे तो वे उसे अपनी मनमर्जी से खर्च करेंगे। यदि खर्च की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी तो खर्चीला स्वभाव बन जायेगा। यह भी हो सकेगा कि लोग उनसे पैसे ऐंठ लेवें या यह भी हो सकता है कि आवश्यकता से अधिक वस्तु खरीद लेवें जिनके पैसे चुकाना सम्भव नहीं है। '

मैंने तानि को 500 रुपये दिये और कहा कि चलो इनसे हम आपकी मन पसंद वस्तु खरीद कर लाते है। आप क्या खरीदना चाहेंगे ? तानि ने कहा हम टॉफियां खरीदते है, मैं खा लूंगी तथा सहेलियों को बांट दूंगी। लेकिन इसके पश्चात् भी शेष रह जायेगी। अतः कुछ रुपयें की टॉफी खरीद लेते हैं अर्थात् यह स्पष्ट होता है कि बालक/बालिका के प्रति हमारा अविश्वास व भय है कि वह सब खर्च देगा लेकिन वास्वत में ऐसा नहीं है। लेकिन यह अवश्य है कि वह खरीदेगा तो कुछ न कुछ सीखेगा ही। जैसे – लाभ लेकर बेचना, बांट कर खाना, आवश्यकता का आकलन करना आदि।
वर्तमान समय अर्थ प्रधान है। बच्चे का बचपन भी अर्थ प्रधान संस्कृति में पल रहा है। बच्चे को इसके सम्बन्ध में जानकारी होनी चाहिए। बच्चे को यह भी ध्यान होना चाहिए कि प्रतिदिन की आवश्यकता का अर्थ (रुपया) कहां से आता है ? कैसे लाया जाता है ? अपने अर्थ कमाने के सम्बन्ध में बच्चों को

जानकारी देनी चाहिए। जिससे यह स्पष्ट होगा कि अर्थोपार्जन कितना दुविधा प्रदान करता है। उससे कैसे समायोजन करते हैं ? यह सब जानने के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए। परिवार की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में बच्चे को जल्दी से जल्दी जानकारी देनी चाहिए। बच्चे को यह स्पष्ट करना चाहिए कि आप पर कुल यह राशि खर्च की जा रही है। उस राशि का सम्पूर्ण या आंशिक खर्च के लिए राशि उसे दे दी जानी चाहिए या अलग व्यवस्था में से बच्चा स्वयं खर्च करें, स्वयं उसका हिसाब रखें। उसे इसके लिए कुछ मदद कर सकते हैं। इससे वह अपनी आवश्यकता निश्चित करेगा, प्राथमिकता निर्धारित करेगा। ये सब विशेषता बच्चे के लिए आवश्यक है। इस प्रकार बच्चा आवश्यक काम में प्राथमिकता निर्धारण, जिम्मेदारियां, दायित्व निर्धारण, चुनौतियां स्वीकार करना आदि सीख जायेगा।

बच्चों को हमें उनसे अधिक आयु के वयस्क मित्र बनाने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। लेकिन हम में से कोई भी यदि यह देखें कि बच्चा ऐसा करता है तो उसे रोकते है। हम सभी वास्तव में यह चाहते हैं कि हमारा बच्चा कम से कम लोगों से सम्पर्क करें, परिचय बढ़ाये या मित्रता करें। हम उसे हमउम्र बच्चों से मित्रता बढ़ाने की स्वीकृति प्रदान करते है। कभी कभी उसे उससे कम या अधिक उम्र के बच्चों के साथ दोस्ती बढ़ाने की स्वीकृती देते हैं लेकिन यह सभी दोस्त ऐसे तो होने ही चाहिए जिन्हे हम या हमारे मित्र उनके माता पिता को जानते हैं लेकिन ऐसे अभिभावक जिन्हें हम नहीं जानते उनके बच्चों को मित्र बनाने की स्वीकृति नहीं देते हैं। उन्हे हम स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में मानते है।

4 मई 2013 अनामिका की सहेली नीलम के माता पिता का मेरे पास दूरभाष आया कि हम जयपुर जा रहे है। यदि आपकी स्वीकृति हो तो हम इसे साथ ले जायें। मैने स्वीकृति दे दी। परन्तु मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने अच्छा नहीं माना।

4 मई 2014 को श्री रणजीत सिंह जी एवं श्री धर्मवीर सिंह से मैने वार्तालाप किया– '' क्या हमें बच्चों को अधिक आयु के व्यक्ति, अनजान व्यक्ति से बातचीत, मित्रता की स्वतंत्रता देनी चाहिए। श्री रणजीतसिहं जी का सटीक प्रत्युत्तर था कि मैं मेरी पुत्री कंचन को उससे अधिक आयु के व्यक्ति से सम्बध नहीं बढ़ाने देता हूं। यदि सम्बंध मेरी जानकारी में मेरे विश्वास होने पर है तो भी मैं उसे हमउम्र व उससे अधिक उम्र के बच्चों के साथ जाने की स्वीकृति नहीं देता। यह तो कभी भी नही कि किसी पड़ोसी के द्वारा अपने साथ बच्ची को जाने की स्वीकृति की स्थिति हो तब मैंने कुछ अन्य अध्यापकों से वार्ता करने पर भी लगभग ऐसी ही स्थिति निकल कर आयी।

सभी की लगभग राय है कि बच्चे अनजान से मित्रता न करें, उसके सभी मित्र हमारी जानकारी में होने चाहिए। इसके पीछे एक ही कारण है कि हमें भय है कि बच्चे का अपहरण न हो जाये। उसमें गलत आदत नहीं पड़े। जबकि ऐसा यदि हम बच्चों को स्वतंत्र छोडें तो कितने में होता है ? यह मात्र एक प्रतिशत है लेकिन हमने उसकी मित्रता परिमार्जित करके उसकी सामाजिकता के विकास, व्यावहारिकता, अच्छे बुरे की पहचान आदि के गुणों के विकास को बाधित कर दिया है।

मैं यह कहना चाहती हूं कि हम जाने अनजाने में बच्चे को शिष्टता, एकान्तता, आत्मनिर्भरता, अर्थ प्रबन्धन, सामाजिकता, निर्णय लेने की क्षमता को बाधित करते है अतः हमे बालकों के साथ –

1. शिष्ट व्यवहार करना चाहिए।
2. उसे अपने समान समझना चाहिए।
3. व्यक्तिगत स्वतंत्रता देनी चाहिए।
4. अपनी आवश्यकता की वस्तु स्वयं खरीदने की स्वतंत्रता देनी चाहिए।
5. स्वतंत्र रूप से मित्र बनाने की छूट देनी चाहिए।

संदर्भ

1. भ स्मे ेबीववस.उवतम ूवता” ज्पउमे उंहंपदम ।नह 27ए1973
2. भ प लवन बंद पिदम पज” ज्पउम दृ मेंल
3. भ ।चचनतजनदपजपमे वित लवनजी” ॅवता कवदम इल ।तकनहवअबतउेज
4. भ ट्वबंजपवदे वित ेवबपंस बींदहम व ंदमलवतद” निर्देशिका
5. भ ब्वउउपजम जव ंदक अपवसमदबम जीम दमगज हमदमतंजपवद” ।जसंदजं श् क्कपदं स्ंरनतमम डण्त्ण्म् नदपअमतेपजल
6. भप्देजपजनजम वित रनअमतदपसम रनेजपबम” छमूलवताए बेपसक रनेजपबम प्देजपजनजम भ म्बंचम तिवउ बीपसकीववक”
7. भजीम नदकमत ंबीपमअपदह ेबीववस” श्रवद हंसज ‘‘ सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के मध्य स्वंय के अनुभवों की चर्चा‘‘ दिनांक 22.12.2013